फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 25)

Ambiya o Auliya ko Pukarna Kaisa (Hindi)

अम्बिया व औलिया को पुकारना कैसा ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

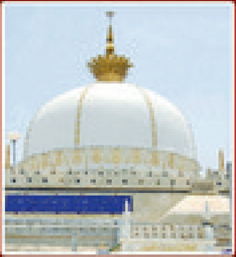
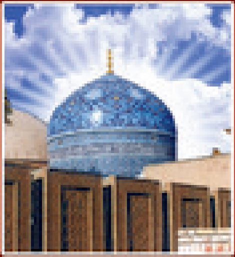
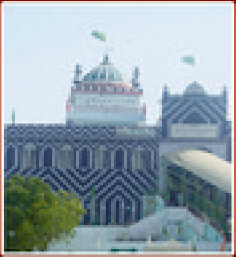
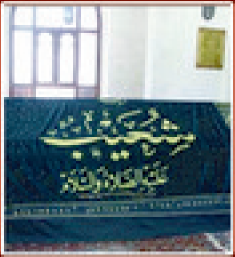

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर 13 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर मवाद के साथ तय्यार किया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المستطرف ج ۱ ص ۴۰ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अम्बिया व औलिया को पुकारना कैसा ?**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत़्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इश्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
22 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1438 सि.हि./14 सितम्बर 2017 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अम्बिया व औलिया को पुकारना कैसा ?
(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (39 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी ।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अम्बिया व औलिया को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारना कैसा ?

सुवाल : क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा अम्बिया व औलिया को भी लफ़्ज़े "या" के साथ पुकार सकते हैं ?

जवाब : लफ़्ज़े "या" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को भी लफ़्ज़े "या" के साथ

مدینہ

(1) مجمع الزوائد، كتاب الاذكار، باب ما يقول اذا أصبح واذا أمسى، ١٠/١٦٣، حديث: ١٧٠٢٢ دار الفكر بيروت

www.dawateislami.net

पुकार सकते हैं इस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं। लफ़्ज़े "या" अ़-रबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिस के मा'ना हैं "ऐ", रोज़मर्रा की आ़म गुफ़्त-गू में भी लफ़्ज़े "या" का आ़म इस्ति'माल है जैसा कि मश्हूर मुह़ा-वरा है "**या शैख़ अपनी अपनी देख**" इस मुह़ा-वरे में भी **ग़ैरुल्लाह** को "या" के साथ मुख़ात़ब किया जाता है।

कुरआने करीम में कई मक़ामात पर लफ़्ज़े "या" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा के साथ आया है म-सलन يَاَيُّهَا النَّبِيُّ ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी), يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ ऐ रसूल, يَاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ऐ झुरमट मारने वाले, يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले, يٰاِبْرٰهِيْمُ ऐ इब्राहीम, يٰمُوْسٰى ऐ मूसा ! يٰعِيْسٰى ऐ ईसा, يٰنُوْحُ ऐ नूह़, يٰدَاوٗدُ ऐ दावूद। आ़म इन्सानों को भी लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारा गया है : يَاَيُّهَا النَّاسُ ऐ लोगो ! इस के इलावा भी कुरआने मजीद में बे शुमार जगह पर लफ़्ज़े "या" **ग़ैरुल्लाह** के साथ आया है। **अह़ादीसे मुबा-रका** में भी कसरत के साथ लफ़्ज़े "या" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा के साथ आया है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह** कह कर ही पुकारते थे। **मुस्लिम शरीफ़** की ह़दीस में है : (जब सरकारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए) فَصَعِدَ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ فَوْقَ الْبُيُوْتِ، وَتَفَرَّقَ الْغِلْمَانُ وَالْخَدَمُ فِي الطُّرُقِ، يُنَادُوْنَ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

www.dawateislami.net

तो मर्द और औ़रतें घरों की छतों पर चढ़ गए और बच्चे और ख़ुद्दाम रास्तों में फैल गए और वोह ना'रे लगा रहे थे **या मुह़म्मद या रसूलल्लाह, या मुह़म्मद या रसूलल्लाह ।**[1]

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नाबीना सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को दुआ़ ता'लीम फ़रमाई जिस में अपने नामे नामी इस्मे गिरामी के साथ लफ़्ज़े "या" इर्शाद फ़रमाया : चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से रिवायत है कि एक नाबीना सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अ़ज़ीम में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : (**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे आ़फ़िय्यत दे (या'नी मेरी बीनाई लौटा दे), आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तू चाहे तो दुआ़ करूं और चाहे तो सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है ।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : दुआ़ फ़रमा दीजिये । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अच्छी त़रह़ वुज़ू करने और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया और फ़रमाया येह दुआ़ करना : اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُكَ، وَاَتَوَجَّهُ اِلَیۡكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِیِّ الرَّحۡمَةِ ، يَا مُحَمَّدُ[2] اِنِّیۡ قَدۡ تَوَجَّهۡتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیۡ فِیۡ حَاجَتِیۡ هٰذِهٖ لِتُقۡضٰی، اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعۡهُ فِیَّ

---

1 ...... مسلم، کتاب الزھد و الرقائق، باب فی حدیث الھجرۃ...الخ، ص١٢٢٨، حدیث: ٧٥٢٢، دار الکتاب العربی بیروت

2 ...... ह़दीसे पाक में "يَامُحَمَّدُ" है मगर इस की जगह "يَارَسُوۡلَ اللّٰه" कहना चाहिये कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करना जाइज़ नहीं । उ़-लमा फ़रमाते हैं : अगर रिवायत में वारिद हो जब भी तब्दील कर लें । मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये आ'ला ह़ज़रत عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت के फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 30 में मौजूद रिसाले "تَجَلِّیُ الۡیَقِیۡنِ بِاَنَّ نَبِیَّنَا سَیِّدُ الۡمُرۡسَلِیۡن" सफ़ह़ा 156 ता 157 का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह होता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए से जो नबिय्ये रह़मत हैं, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप के ज़रीए से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ इस ह़ाजत के बारे में मु-तवज्जेह होता हूं ताकि मेरी येह ह़ाजत पूरी हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा ।(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : فَوَاللّٰهِ مَا تَفَرَّقْنَا وَطَالَ بِنَا الْحَدِيْثُ حَتّٰى دَخَلَ عَلَيْنَا الرَّجُلُ كَاَنَّهٗ لَمْ يَكُنْ بِهٖ ضُرٌّ قَطُّ ख़ुदा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे और न ही हमारी गुफ़्त-गू ज़ियादा त़वील हुई थी कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी नाबीना ही न हुए ।(2) मा'लूम हुवा कि **ग़ैरुल्लाह** को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारना शिर्क नहीं अगर येह शिर्क होता तो क़ुरआन व ह़दीस में **ग़ैरुल्लाह** के साथ लफ़्ज़े "या" न आता और ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हरगिज़ इस की ता'लीम इर्शाद न फ़रमाते और न ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस पर अ़मल पैरा होते ।

ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

مدینہ

1 ...... ابنِ ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب ما جاء فی صلاۃ الحاجۃ، ۲/۱۵۶، حدیث: ۱۳۸۵ دار المعرفۃ بیروت

2 ...... معجم کبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ۹/۳۱، حدیث: ۸۳۱ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

लफ़्ज़े "या" के साथ दूर वालों को पुकार सकते हैं

सुवाल : क्या लफ़्ज़े "या" के साथ दूर वालों को भी पुकार सकते हैं ? नीज़ वोह दूर से सुनते और देखते हैं या नहीं ?

जवाब : जी हां जिस त़रह़ लफ़्ज़े "या" के साथ क़रीब वालों को पुकार सकते हैं ऐसे ही दूर वालों को भी पुकार सकते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस के मक़्बूल बन्दे दूर से सुनते, देखते और ह़ाजत रवाई फ़रमाते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, उस से मैं ने लड़ाई का ए'लान कर दिया और मेरा बन्दा किसी शै से मेरा इस क़दर क़ुर्ब ह़ासिल नहीं करता जितना फ़राइज़ से करता है और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए़ से हमेशा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे मह़बूब बना लेता हूं और जब उस से मह़ब्बत करने लगता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है और मैं उस की आंख बन जाता हूं जिस से वोह देखता है और उस का हाथ बन जाता हूं जिस के साथ वोह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूं जिस के साथ वोह चलता है और अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो ज़रूर उसे दूंगा और पनाह मांगे तो ज़रूर उसे पनाह दूंगा।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : فَاِذَا صَارَ نُوْرُ جَلَالِ اللّٰهِ سَمْعًا لَهٗ سَمِعَ الْقَرِیْبَ وَالْبَعِیْدَ जब

---

1 ...... بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۲۴۸/۴، حدیث: ۶۵۰۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नूरे जलाल बन्दए मह़बूब के कान बन जाता है तो वोह दूर व नज़्दीक की आवाज़ सुन लेता है, وَاِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ بَصَرًا لَهٗ رَاَى الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ और जब उस की आंखें नूरे जलाल से मुनव्वर हो जाती हैं तो वोह दूर व नज़्दीक को देख लेता है, وَاِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ يَدًا لَهٗ قَدَرَ عَلَى التَّصَرُّفِ فِى الصَّعْبِ وَالسَّهْلِ وَالْبَعِيْدِ وَالْقَرِيْبِ और जब येही नूर बन्दए मह़बूब के हाथों में जल्वा-गर होता है तो उसे मुश्किल व आसान और दूर व नज़्दीक में तसर्रुफ़ करने की क़ुदरत ह़ासिल हो जाती है ।(1)

ह़दीसे पाक में है : जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या तुम में से कोई मदद मांगना चाहे और वोह ऐसी जगह हो जहां उस का कोई पुरसाने ह़ाल न हो तो उसे चाहिये कि यूं कहे : "يَا عِبَادَ اللهِ اَغِيْثُوْنِىْ، يَا عِبَادَ اللهِ اَغِيْثُوْنِىْ ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो, ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं जिन्हें येह नहीं देखता (वोह उस की मदद करेंगे) ।(2)

बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने बारगाह को पुकार सकते हैं

सुवाल : क्या बा'दे वफ़ात भी मक़्बूलाने बारगाह को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकार सकते हैं ?

जवाब : जी हां । बा'दे वफ़ात भी मक़्बूलाने बारगाह को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकार सकते हैं इस में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं । **अल्लाह**

(1) تفسیرِ کبیر، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۱۲، ۷/۴۳۶ دار احیاء التراث العربی بیروت

(2) کنز العمال، کتاب السفر، الجزء: ۶، ۳/ ۳۰۰، حدیث: ۱۷۴۹۴ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की शान तो बहुत बुलन्दो बाला है आ़म मुर्दों को भी बा'दे वफ़ात लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारा जाता है और वोह सुनते हैं जैसा कि ह़दीसे पाक में है : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले जाते तो क़ब्रों की त़रफ़ अपना रुखे़ अन्वर कर के यूं फ़रमाते : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ، يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ، اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो **अल्लाह** हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम लोग हम से पहले चले गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।(1)

इस ह़दीसे पाक में बा'दे वफ़ात अहले क़ुबूर को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारा भी गया है और उन्हें सलाम भी किया गया है, सलाम उसे किया जाता है जो सुनता हो और जवाब भी देता हो जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : क़ब्रिस्तान में जा कर पहले सलाम करना फिर येह अ़र्ज़ करना सुन्नत है, इस के बा'द अहले क़ुबूर को ईसाले सवाब किया जाए। इस से मा'लूम हुवा कि मुर्दे बाहर वालों को देखते पहचानते हैं और उन का कलाम सुनते हैं वरना उन्हें सलाम जाइज़ न होता क्यूं कि जो सुनता न हो या सलाम का जवाब न दे सकता हो उसे सलाम करना जाइज़ नहीं, देखो सोने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले को सलाम नहीं कर सकते।(2)

हर नमाज़ी नमाज़ में तशह्हुद पढ़ता है और नबिय्ये करीम

مدینہ

1 ...... ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما یقول الرجل اذا دخل المقابر، ۲/۳۲۹، حدیث: ۱۰۵۵ دار الفکر بیروت

2 ...... मिरआतुल मनाजीह़, 2/524, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में इन अल्फ़ाज़ "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه"(1) के साथ सलाम पेश करता है । इस सलाम में पुकारना भी है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुख़ातब करना भी । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते ज़ाहिरी में भी दूर व नज़्दीक से येह सलाम आप की बारगाहे अक्दस में पेश किया जाता था और विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी पेश किया जा रहा है और ता क़ियामत पेश किया जाता रहेगा । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से इस सलाम व पुकार को सुनते हैं और जवाब भी अ़ता फ़रमाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ औलिया ने बत़ौरे करामत अपने क़ौल "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُه" के जवाब में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जवाब अ़ता फ़रमाना सुना है और येह मुह़ाल नहीं है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ैब पर मुत्तलअ़ फ़रमाया है और हर उस शख़्स का कलाम सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है जो दूर व नज़्दीक से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुख़ातिब होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस बात में भी कोई फ़र्क़ नहीं कि येह कलाम सुनना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते ज़ाहिरी में हो या विसाले ज़ाहिरी के बा'द । तह़क़ीक़ येह बात दुरुस्त है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा हैं ।(2)

مدینہ

1...... या'नी सलाम हो आप पर ऐ नबी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें ।

2...... شواھدُ الحق، فصل فی رد ما منعه ابن القیم...الخ، الفصل الثانی، ص ۲۱۱ مرکز اھل سنّت برکات رضا گجرات ھند

www.dawateislami.net

ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : فَلَا فَرْقَ لَهُمْ فِی الْحَالَیْنِ وَلِذَا قِیْلَ اَوْلِیَاءُ اللهِ لَا یَمُوْتُوْنَ وَلٰکِنْ یَنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰی دَارٍ या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दोनों ह़ालतों (ज़िन्दगी और मौत) में कोई फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली (और नबी) मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं।[1]

ज़ाहिरी विसाल से इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की क़ुव्वतें और सलाहिय्यतें ख़त्म नहीं हो जातीं बल्कि इन में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है क्यूं कि दुन्या में तो येह क़ैद में थे विसाले ज़ाहिरी के बा'द इस क़ैद से आज़ाद हो जाते हैं लिहाज़ा इन की क़ुव्वत में भी इज़ाफ़ा हो जाता है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : दुन्या मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है, जब मोमिन मर जाता है तो उस की राह खोल दी जाती है कि जहां चाहे सैर करे।[2] मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बा'द मरने के सम्अ़, बसर, इदराक (या'नी देखना, सुनना और समझना) आ़म लोगों का यहां तक कि कुफ़्फ़ार का ज़ाइद हो जाता है और येह तमाम अहले सुन्नत व जमाअ़त का इज्माई अ़क़ीदा है।[3]

1 ...... مرقاۃُ المفاتیح ، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، الفصل الثالث ، ۳/ ۴۵۹، تحت الحدیث: ۱۳۶۶ دار الفکر بیروت

2 ...... کشف الخفاء، حرف الدال المھملۃ، ۱/ ۳۶۳، حدیث: ۱۳۱۶ دار الکتب العلمیۃ بیروت

3 ...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 363, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

दूर से देखना और सुनना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त नहीं

सुवाल : क्या दूर से देखना और सुनना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त नहीं ?

जवाब : दूर से देखना और सुनना हरगिज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त नहीं क्यूं कि दूर से तो वोह देखता और सुनता है जो पुकारने वाले से दूर हो जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो अपने बन्दों के क़रीब है जैसा कि पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 186 में खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है :

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं।

इसी त़रह़ पारह 26 **सूरए** قٓ की आयत नम्बर 16 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ ﴿۱۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं।

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इ़ल्मो क़ुदरत के ए'तिबार से अपने बन्दों के क़रीब है तो फिर दूर से देखना और सुनना उस की सिफ़त कैसे हो सकती है !

दूर से देखने और सुनने के वाक़िआ़त

सुवाल : मक़्बूलाने बारगाहे इलाही के दूर से देखने, सुनने और तसर्रुफ़ फ़रमाने के चन्द वाक़िआ़त बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बरगुज़ीदा बन्दों को दूर से देखने, सुनने और तसर्रुफ़ करने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है लिहाज़ा वोह

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से दूर से देखते और सुनते और तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में सूरज को ग्रहन लगा, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी, (दौराने नमाज़ हाथ बढ़ा कर कुछ लेना चाहा लेकिन फिर दस्ते मुबारक नीचे कर दिया, नमाज़ के बा'द) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने देखा कि आप अपनी जगह से किसी चीज़ को पकड़ रहे थे, फिर हम ने देखा कि आप पीछे हटे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اِنِّیۡ اُرِیۡتُ الۡجَنَّةَ فَتَنَاوَلۡتُ مِنۡهَا عُنۡقُوۡدًا وَلَوۡ اَخَذۡتُهٗ لَاَکَلۡتُمۡ مِنۡهُ مَا بَقِیَتِ الدُّنۡیَا मुझे जन्नत दिखाई गई तो मैं उस में से एक ख़ोशा तोड़ने लगा, अगर मैं उस ख़ोशे को तोड़ लेता तो तुम रहती दुन्या तक उस में से खाते रहते।[(1)]

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से दो मस्अले मा'लूम हुए : **एक** येह कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत और वहां के फलों वग़ैरा के मालिक हैं कि ख़ोशा तोड़ने से रब ने मन्अ़ न किया ख़ुद न तोड़ा, क्यूं न हो कि रब तआ़ला फ़रमाता है : [(2)]﴿اِنَّاۤ اَعۡطَیۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ ؕ﴾ इसी लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा को कौसर का पानी बारहा पिलाया। **दूसरे** येह कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रब तआ़ला ने वोह

---

1 ...... بخاری، کتاب الاذان، باب رفع البصر الی الامام فی الصلوۃ، ۱/۲۶۵، حدیث:۷۴۸

2 ...... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं। (پ۳۰، الکوثر:۱)

www.dawateislami.net

ताक़त दी है कि मदीने में खड़े हो कर जन्नत में हाथ डाल सकते हैं और वहां तसर्रुफ़ कर सकते हैं, जिन का हाथ मदीने से जन्नत में पहुंच सकता है क्या उन का हाथ हम जैसे गुनहगारों की दस्त-गीरी के वासिते नहीं पहुंच सकता और अगर येह कहो कि जन्नत क़रीब आ गई थी तो जन्नत और वहां की ने'मतें हर जगह हाज़िर हुई। बहर हाल इस ह़दीस से या हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हाज़िर मानना पड़ेगा या जन्नत को।[1]

ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ से वाज़ेह़ तौर पर येह बात साबित होती है कि हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब अ़ताए परवर दगार ज़मीन पर खड़े हो कर सातों आस्मानों से भी ऊपर जन्नत को न सिर्फ़ देख लिया बल्कि अपना दस्ते मुबारक भी जन्नत के ख़ोशे तक पहुंचा दिया।

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن को भी दूर से देखने, सुनने और तसर्रुफ़ करने की क़ुव्वत ह़ासिल है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस्लामी लश्कर का सिपह सालार बना कर नहावन्द[2] भेजा,

---

[1]...... मिरआतुल मनाजीह़, 2/382

[2]...... नहावन्द ईरान में सूबए आज़र बाईजान के पहाड़ी शहरों में से है और मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से इतना दूर है कि एक माह चल कर भी आदमी वहां नहीं पहुंच सकता। (حاشیہ اشعۃ اللمعات، ۴/۲۱۵ کوئٹہ)

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिहाद में मसरूफ़ थे, इधर मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुआ़ का ख़ुत़्बा फ़रमा रहे थे, यकायक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़्बा छोड़ कर तीन बार फ़रमाया : "یَا سَارِیَۃُ الْجَبَل या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ जाओ ।" फिर इस के बा'द ख़ुत़्बा शुरूअ़ फ़रमा दिया, बा'दे नमाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस पुकार की वज्ह दरयाफ़्त की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने मुसल्मानों को देखा कि वोह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ़्फ़ार ने उन्हें आगे पीछे से घेर रखा है, येह देख कर मुझ से ज़ब्त़ न हो सका और मैं ने कह दिया : "یَا سَارِیَۃُ الْجَبَل या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ जाओ । इस वाक़िए के कुछ रोज़ बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ासिद एक ख़त़ ले कर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमुआ़ के दिन कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ऐ़न जुमुआ़ की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की आवाज़ सुनी : "یَا سَارِیَۃُ الْجَبَل या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ जाओ ।" इस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की त़रफ़ चले गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार को शिकस्त दी हम ने उन्हें क़त्ल कर डाला, इस त़रह़ हमें फ़त्ह़ ह़ासिल हो गई ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़फ़ीफ़ुद्दीन **अ़ब्दुल्लाह** याफ़ेई य-मनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस शरीफ़ से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

مدینہ

(1) ...... کنز العمّال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، فضائل الفاروق، الجزء:۱۲، ۲۵۶/۶، حدیث: ۳۵۷۸۵–۳۵۷۸۳ ملخصًا

www.dawateislami.net

की दो करामतें ज़ाहिर हुईं : (1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से (चौदह सो (1400) मील दूर) मक़ाम नहावन्द में मौजूद लश्करे इस्लाम और उन के दुश्मन को मुला-हज़ा फ़रमा लिया और (2) मदीनए तृय्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से इतनी दूर आवाज़ पहुंचा दी।[1]

हज़रते सय्यिदुना शैख़ आरिफ़ अबुल क़ासिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی दौराने वा'ज़ इस्तिग़राक़ की हालत में हो गए यहां तक कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इमामे का बल (या'नी पेच) खुल गया तो तमाम हाज़िरीन ने भी अपने इमामे और टोपियां ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की कुर्सी की त़रफ़ फेंक दिये। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वा'ज़ से फ़ारिग़ हुए तो अपने इमामे शरीफ़ को दुरुस्त फ़रमाया और मुझे हुक्म दिया कि ऐ अबुल क़ासिम ! लोगों को उन के इमामे और टोपियां दे दो। मैं ने सब लोगों को उन के इमामे और टोपियां दे दीं लेकिन आख़िर में एक दोपट्टा रह गया मैं नहीं जानता था कि येह किस का है ? हालां कि मजलिस में कोई भी ऐसा न बचा था जिस का कुछ रह गया हो। हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने मुझ से फ़रमाया : येह मुझे दे दो। मैं ने वोह दोपट्टा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को दे दिया। आप ने उसे अपने कन्धे पर रखा तो वोह ग़ाइब हो गया। मैं हैरानगी से दम बख़ुद रह गया। फ़रमाया : ऐ अबुल क़ासिम ! जब मजलिस में लोगों ने अपने इमामे उतार दिये तो हमारी एक बहन ने अस्बहान से अपना

[1] روض الریاحین، ص ۳۹ ماخوذاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

दोपट्टा उतार कर फेंक दिया था। फिर जब मैं ने उस दोपट्टे को अपने शानों पर रखा तो उस ने अस्बहान से अपना हाथ बढ़ाया और अपने दोपट्टे को उठा लिया।(1)

मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक और बरगुज़ीदा बन्दे दूर से देखते, सुनते और तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं। देखिये ! आज के इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में साइन्सी आलात (मोबाइल, रेडियो और टीवी वग़ैरा) के ज़रीए़ ब-यक वक़्त एक ही लम्हे में दुन्या के कोने कोने में आवाज़ और शबीह को सुना और देखा भी जा सकता है। जब साइन्सी आलात के ज़रीए़ येह सब कुछ हो सकता है तो रूहा़नी राबिते़ (Conection) के ज़रीए़ क्यूं नहीं हो सकता ? रूहा़नी राबिता़ तो साइन्सी राबिते़ से ज़ियादा ता़क़त वर (Powerfull) है। साइन्स वाला दूर की आवाज़ और शबीह सुना और दिखा दे तो किसी को वस्वसा नहीं आता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी अ़ता़ से अपने मह़बूब बन्दों को दूर की आवाज़ सुना दे तो वस्वसे आने शुरूअ़ हो जाते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने मक़्बूल बन्दों की मह़ब्बत नसीब फ़रमाए और इन के फ़ज़ाइलो कमालात मानने की तौफ़ीक़ अ़ता़ फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़सीदए नूर के एक शे'र की तशरीह़

सुवाल : आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के मुन्द-र-जए ज़ैल शे'र में "दिल जल रहा था नूर का" से क्या मुराद है ?

مدینہ

(1) بہجۃ الاسرار، ذکر وعظہ، ص ۱۸۵ ملتقطاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

नारियों का दौर था दिल जल रहा था नूर का

तुम को देखा हो गया ठन्डा कलेजा नूर का

जवाब : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के इस शे'र में दोनों जगह "नूर" से मुराद दीने इस्लाम ली जा सकती है। मत़लब येह है कि ए'लाने नुबुव्वत के आग़ाज़ में नारियों (या'नी ग़ैर मुस्लिमों) का दौर दौरा था, हर त़रफ़ जहालत का घटाटोप अंधेरा छाया हुवा था, कुफ़्र व कुफ़्फ़ार का ग़-लबा देख कर दीने इस्लाम कुढ़ रहा था फिर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने नूर की किरनें बिखेरीं तो कुफ़्र व कुफ़्फ़ार का ग़-लबा ख़त्म हो गया, दीने इस्लाम की रोशनी हर सू आ़म होने लगी तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर दीने इस्लाम का कलेजा ठन्डा हो गया।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की ह़-र-कत पे ख़न्दा ज़न

फूंकों से येह चराग़ बुझाया न जाएगा

दीनी काम के लिये झूट बोलना कैसा ?

सुवाल : झूट बोलना कैसा है ? नीज़ दीनी काम के लिये झूट बोल सकते हैं या नहीं ?

जवाब : झूट ऐसी बुरी चीज़ है कि हर मज़्हब वाले इस की बुराई करते हैं तमाम अद्यान (या'नी तमाम दीनों) में येह ह़राम है। इस्लाम ने इस से बचने की बहुत ताकीद की, क़ुरआने मजीद में बहुत मवाक़ेअ़ पर इस की मज़म्मत फ़रमाई और झूट बोलने वालों पर ख़ुदा की ला'नत आई। ह़दीसों में भी इस की बुराई ज़िक्र

www.dawateislami.net

की गई है।(1) रही बात दीनी काम के लिये झूट बोलने की तो इस की इजाज़त नहीं बल्कि दीनी काम के लिये झूट बोलना ज़ियादा सख़्त गुनाह है क्यूं कि दीनी काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये किया जाता है तो झूट बोल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा कैसे ह़ासिल हो सकती है ! याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उसे इस बात की क़त़्अन ह़ाजत नहीं कि कोई दीन का काम करे ही करे, हम उस के मोह़ताज हैं लिहाज़ा हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात के मुत़ाबिक़ ही दीन की ख़िदमत बजा लानी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सच की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमाए और झूट से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

(वसाइले बख़्शिश)

झूट बोलना कब गुनाह नहीं ?

सुवाल : क्या झूट बोलने की कोई ऐसी सूरत भी है जिस में झूट बोलना गुनाह न हो ?

जवाब : जी हां ! कई सूरतें ऐसी हैं जिन में झूट बोलना गुनाह नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन चीज़ों में झूट बोलना जाइज़ है : शोहर का अपनी ज़ौजा को

1...... बहारे शरीअ़त, 3/515, ह़िस्सा : 16, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

राज़ी करने के लिये, जंग में धोका देने के लिये और लोगों के दरमियान सुल्ह़ करवाने के लिये।(1) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1332 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 517 पर है : "तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह नहीं। **एक** जंग की सूरत में कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, इसी त़रह़ जब ज़ालिम ज़ुल्म करना चाहता हो उस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी जाइज़ है। **दूसरी** सूरत येह है कि दो मुसल्मानों में इख़्तिलाफ़ है और येह उन दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है, म-सलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए। **तीसरी** सूरत येह है कि बीबी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे।"

याद रहे कि जिस अच्छे मक़्सद को सच बोल कर भी ह़ासिल किया जा सकता हो और झूट बोल कर भी, तो उस को ह़ासिल करने के लिये झूट बोलना ह़राम है। अगर झूट से ह़ासिल हो सकता हो, सच बोलने में ह़ासिल न हो सकता हो तो बा'ज़ सूरतों में झूट मुबाह़ (जाइज़) है बल्कि बा'ज़ सूरतों में वाजिब है, जैसे किसी बे गुनाह आदमी को ज़ालिम शख़्स क़त्ल करना चाहता है या ईज़ा देना चाहता है वोह डर से छुपा हुवा है, ज़ालिम ने किसी से दरयाफ़्त किया कि वोह कहां है ? येह कह

(1) ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ما جاء فی اصلاح ذات البین، ۳/۳۷۷، حدیث: ۱۹۴۵

www.dawateislami.net

सकता है मुझे मा'लूम नहीं अगर्चे जानता हो या किसी की अमानत इस के पास है कोई उसे छीनना चाहता है पूछता है कि अमानत कहां है ? येह इन्कार करते हुए कह सकता है कि मेरे पास उस की अमानत नहीं ।[1]

इसी त़रह़ किसी ने छुप कर बे ह़याई का काम किया है तो पूछने पर वोह इन्कार कर सकता है क्यूं कि ऐसे काम को लोगों के सामने ज़ाहिर करना येह दूसरा गुनाह है। यूं ही अगर कोई अपने मुसल्मान भाई के राज़ पर मुत्त़लअ़ हो तो उस के बयान करने से भी इन्कार कर सकता है।[2] अगर सच बोलने में फ़साद पैदा होता हो तो इस सूरत में भी झूट बोलना जाइज़ है और अगर झूट बोलने में फ़साद होता हो तो ह़राम है और अगर शक हो मा'लूम नहीं कि सच बोलने में फ़साद होगा या झूट बोलने में, जब भी झूट बोलना ह़राम है[3] ।[4]

मुसल्मानों में फूट डलवाने की मज़म्मत

सुवाल : चुग़ली वग़ैरा के ज़रीए़ दो मुसल्मानों में फूट डलवाना कैसा है ?

जवाब : चुग़ली[5] वग़ैरा के ज़रीए़ दो मुसल्मानों में फूट डलवाना गुनाहे

---

1 ...... ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، ۹/۷۰۵ ملخصاً دار المعرفۃ بیروت

2 ...... ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، ۹/۷۰۵ ملخصاً

3 ...... बहारे शरीअ़त, 3/518, ह़िस्सा : 16

4 ...... मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द सिवुम के ह़िस्सा 16 का मुत़ा-लआ़ कीजिये । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

5 ...... किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना "चुग़ली" कहलाता है । (عمدۃ القاری، ۲/۵۹۴، تحت الحدیث:۲۱۶ دار الفکر بیروت) इस के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम सीखना भी फ़र्ज़ है। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

कबीरा, सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है क्यूं कि येह मुसल्मानों में इख़्तिलाफ़ और जंगो जिदाल का बहुत बड़ा सबब है। शरीअ़ते मुत़ह्हरा को मुसल्मानों का आपस में इत्तिफ़ाक़ो इत्तिह़ाद इस क़दर मह़बूब है कि जब दो मुसल्मान आपस में नाराज़ हो जाएं तो शरीअ़त ने उन के दरमियान बाहम सुल्ह़ करवाने के लिये झूट बोलने तक की इजाज़त दी है। इस से अन्दाज़ा लगाइये कि वोह लोग कितने बुरे हैं जो झूट, ग़ीबत और चुग़ली वग़ैरा के ज़रीए़ मुसल्मानों को आपस में लड़वाते और उन के दरमियान जुदाई डलवाते हैं चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला के बद तरीन बन्दे वोह हैं जो लोगों में चुग़ली खाते फिरते हैं और दोस्तों के दरमियान जुदाई डालते हैं।(1)

बद क़िस्मती से आज कल मुसल्मानों में सुल्ह़ करवाने और इन्हें आपस में मिलाने के बजाए चुग़ली वग़ैरा के ज़रीए़ उन में जुदाई डाल दी जाती है म-सलन अगर किसी ने दूसरे के मु-तअ़ल्लिक़ कोई बात कर दी तो वोह जा कर उसे बता देता है कि फ़ुलां ने तुम्हारे मु-तअ़ल्लिक़ ऐसा ऐसा कहा है तो यूं दो मुसल्मानों के दरमियान फ़ासिले कम करने के बजाए मज़ीद फ़ासिले बढ़ा कर दोनों में बुग़्ज़ो अ़दावत की दीवार खड़ी कर देते हैं। याद रखिये ! मुसल्मानों के दरमियान फूट डलवाना येह शैत़ानी काम है इस से हर मुसल्मान को बचना चाहिये।

मुझे ग़ीबतो चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

1 ...... مُسندِ امام احمد، من حدیث اسماء ابنۃ یزید، ۱۰/۴۴۳، حدیث: ۲۷۶۷۰ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

तौबा के मा'ना और इस की हक़ीक़त

सुवाल : तौबा का क्या मा'ना है ? नीज़ इस की हक़ीक़त भी बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : तौबा का मा'ना है रुजूअ़ करना और लौट जाना जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : तौबा के मा'ना रुजूअ़ करना । अगर येह ह़क़ तआ़ला की सिफ़त हो तो इस के मा'ना होते हैं इरादए अ़ज़ाब से (अपनी शान के लाइक़) रुजूअ़ फ़रमा लेना[1] और अगर येह बन्दे की सिफ़त हो (या'नी येह कहा जाए कि बन्दे ने तौबा की) तो इस के मा'ना होते हैं गुनाह से इत़ाअ़त की त़रफ़, ग़फ़्लत से ज़िक्र की त़रफ़, ग़ैबत (या'नी ग़ैर ह़ाज़िरी) से हुज़ूर (या'नी ह़ाज़िरी) की त़रफ़ लौट जाना (या'नी पलट आना) । तौबए सह़ीह़ येह है कि बन्दा गुज़श्ता गुनाहों पर नादिम हो, आयिन्दा न करने का अ़ह्द करे और जिस क़दर हो सके उसी क़दर गुज़श्ता गुनाहों का इवज़ और बदला कर दे, नमाज़ें (रहती) हों तो क़ज़ा करे, किसी का क़र्ज़ रह गया है तो अदा कर दे । ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى) फ़रमाते हैं कि तौबा का कमाल येह है कि दिल लज़्ज़ते गुनाह बल्कि

1...... जैसा कि पारह 4 **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 17 में है : ﴿اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ یَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِیْبٍ فَاُولٰٓىٕكَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है

www.dawateislami.net

गुनाह भूल जाए (या'नी दोबारा उस गुनाह के करने का ख़याल भी दिल में न आए) ।(1)

तौबा के मा'ना अक्सर लोगों ने अपने गाल पर चपत मार लेना या अपने कान पकड़ कर ज़बान से "तौबा तौबा" कर लेना समझ रखा है, येह हरगिज़ तौबा नहीं है, तौबा की ह़क़ीक़त तो येह है कि बन्दा जिस गुनाह से तौबा करना चाहता है उस गुनाह पर शरमिन्दा हो कर उसे तर्क कर दे और आयिन्दा उस से बचने का पुख़्ता इरादा करे । इस त़रह़ अगर कोई तौबा करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा चुनान्चे पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** की आयत नम्बर 25 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

وَهُوَ الَّذِىۡ يَقۡبَلُ التَّوۡبَةَ عَنۡ عِبَادِهٖ وَيَعۡفُوۡا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعۡلَمُ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ۙ﴿۲۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो ।

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत (या'नी गुनाह) से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर (या'नी वाक़ेअ़) हुवा उस पर नादिम (शरमिन्दा) हो और हमेशा गुनाह से मुज्तनिब (या'नी दूर) रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की ह़क़ त-लफ़ी भी थी तो उस ह़क़ से ब त़रीक़े

1...... मिरआतुल मनाजीह़, 3/353

www.dawateislami.net

शर-ई ओ़हदा बरआ हो (या'नी अगर किसी गुनाह में बन्दे का कोई ह़क़ मारा तो जिस त़रह़ शरीअ़त ने उसे अदा करने का हुक्म दिया है उस त़रह़ उसे अदा करे) ।"

ह़दीसे पाक में गुनाहों पर नदामत को भी तौबा कहा गया है चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ नदामत (या'नी शरमिन्दगी) तौबा है ।(1)

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
मगर रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश)

तौबा करना तमाम लोगों पर वाजिब है

सुवाल : तौबा करना कब वाजिब होता है ?

जवाब : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي इर्शाद फ़रमाते हैं : गुनाह सरज़द होने पर फ़ौरन तौबा करना वाजिब है क्यूं कि गुनाहों को छोड़ देना हमेशा वाजिब है । इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करना भी हमेशा वाजिब (या'नी ज़रूरी) है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ﴿وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ﴾ (پ۱۸، النور:۳۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसल्मानो ! सब के सब ।" इस आयत से येह बात मा'लूम होती है कि तौबा करना तमाम लोगों पर वाजिब है येह इस लिये कि आ़म त़ौर पर कोई भी इन्सान आ'ज़ा या ख़यालात के गुनाहों से ख़ाली

مدینہ

1 ...... ابنِ ماجه، کتاب الزھد، باب ذکر التوبة، ۴/۴۹۲، حدیث:۴۲۵۲

www.dawateislami.net

नहीं होता और इस की कम अज़् कम सूरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से ग़ाफ़िल होना या उस से तवज्जोह का हट जाना है, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की येह शान है कि वोह इस से भी तौबा करते हैं।(1)

जब भी ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत (या'नी इन्सानी तक़ाज़े की वज्ह से) गुनाह सरज़द हो जाए तो बिग़ैर ताख़ीर किये फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये। तौबा करने के लिये न तो वुज़ू और ग़ुस्ल करने की ज़रूरत है और न ही मस्जिद वग़ैरा में जाने की हाजत और न ही ब-र-कत वाले अय्याम मिस्ल जुमुआ वग़ैरा का इन्तिज़ार ज़रूरी क्यूं कि तौबा गुनाहों पर शरमिन्दा होने, उन्हें छोड़ देने और आयिन्दा उन से बचने के पुख़्ता इरादे का नाम है लिहाज़ा इस के लिये ख़ास जगह और दिन की क़ैद नहीं।

गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए तौबा करना कैसा ?

सुवाल : गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए सिर्फ़ ज़बान से तौबा करते रहना कैसा है ? नीज़ तौबा की सूरतें भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए फ़क़त ज़बान से तौबा कर लेना काफ़ी नहीं म-सलन कोई शख़्स बे नमाज़ी या दाढ़ी मुन्डा है और वोह अपने इन गुनाहों से तौबा करता है लेकिन इस के बा वुजूद नमाज़ नहीं पढ़ता, दाढ़ी नहीं रखता तो उस का येह तौबा करना नहीं कहलाएगा क्यूं कि जिस गुनाह से वोह तौबा कर रहा है उस गुनाह को उस ने छोड़ा ही नहीं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्हा 700 पर

(1) ..... لبابُ الاحياء، الباب الحادی والثلاثون فی التوبة، ص ٢٧٢ دار البیروتی

www.dawateislami.net

है : तौबा जब ही सहीह़ है कि क़ज़ा पढ़ ले। उस को तो अदा न करे, तौबा किये जाए, येह तौबा नहीं कि वोह नमाज़ जो इस के ज़िम्मे थी उस का न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आया, तौबा कहां हुई। ह़दीस में फ़रमाया : गुनाह पर क़ाइम रह कर इस्तिग़्फ़ार (तौबा) करने वाला उस के मिस्ल है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से ठठ्ठा (या'नी मज़ाक़) करता है।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : तौबा की तीन सूरतें हैं : (1) हुक़ूक़े शरीअ़त से तौबा (2) हुक़ूक़ुल इ़बाद से तौबा और (3) हुक़ूक़ुल्लाह से तौबा। हुक़ूक़े शरीअ़त की तौबा में ज़रूरी है कि वोह हुक़ूक़ अदा कर दिये जाएं। नमाज़ें रह गई हैं तो क़ज़ा करे, रोज़े रह गए हैं तो पूरे करे, दाढ़ी मुंडाता है तो तौबा करे और आयिन्दा न मुंडाने का अ़हद करे। ऐसे ही बन्दों के हुक़ूक़ अदा करे।[2]

गुनाह को हलका या ह़लाल जानना कैसा ?

सुवाल : किसी गुनाह को हलका या ह़लाल समझना कैसा है ?

जवाब : किसी गुनाह को हलका जानना उसे सग़ीरा से कबीरा कर देता है और अगर उस का गुनाह होना ज़रूरिय्याते दीन[3] में से हो

---

1 ...... شعب الایمان، باب فی معالجة... الخ، ۵/۴۳۶، حدیث:۷۱۷۸، دار الکتب العلمیة بیروت

2 ...... तफ़्सीरे नईमी, पारह : 3, आले इमरान, तह़्तल आयह : 17, 3/296, मक्तबए इस्लामिया, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

3 ...... ज़रूरिय्याते दीन वोह मसाइले दीन हैं जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत, अम्बिया की नुबुव्वत, जन्नत व नार, ह़श्रो नश्र वग़ैरहा, म-सलन येह ए'तिक़ाद कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ा-तमुन्नबिय्यीन हैं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता। (बहारे शरीअ़त, 1/172, हिस्सा : 1)

www.dawateislami.net

तो फिर उस को हलका जानना कुफ़्र है, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : बा'ज़ वक़्त सग़ीरा का इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी हलका जानना) कुफ़्र हो जाएगा जब कि उस का गुनाह होना ज़रूरिय्याते दीन से हो । उ-लमा फ़रमाते हैं : किसी ने कोई गुनाह किया उस से लोगों ने कहा : तौबा कर, जवाब दिया : "چہ کردہ اَم کہ تَوبَہ کُنَم या'नी मैं ने क्या किया है कि तौबा करूं ?" तो कुफ़्र हो जाएगा । बहुत से सग़ाइर (या'नी छोटे गुनाह) ऐसे हैं जिन का मा'सियत (या'नी गुनाह) होना ज़रूरिय्याते दीन से है म-सलन अज्नबिय्या से मस व तक़्बील (या'नी छूना और बोसा) सग़ीरा है "اِلَّا اللَّمَم" (मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए) में दाख़िल है अगर ह़लाल जाने काफ़िर है । (फिर फ़रमाया :) जिस को समझा कि येह हलका गुनाह है फ़ौरन सग़ीरा से कबीरा हो गया । औलियाए किराम फ़रमाते हैं : इस गुनाह को दूसरे गुनाह से निस्बत देता है कि इस से छोटा है येह नहीं देखता कि गुनाह किस का कर रहा है ! अगर देखता तो येह फ़र्क़ न करता ।[1]

रही बात गुनाह को ह़लाल समझने की तो अगर वोह गुनाह ज़रूरिय्याते दीन में से हो तो उसे ह़लाल समझना कुफ़्र है वरना नहीं जैसा कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : मज़्हबे मो'तमद व मुह़क़्क़क़ में इस्तिह़लाल भी अ़ला इत़्लाक़िह (या'नी मज़्हबे मो'तमद व मुह़क़्क़क़ में किसी गुनाह को ह़लाल जानना भी मुत़्लक़न) कुफ़्र नहीं जब तक ज़िना या शुर्बे ख़म्र (या'नी शराब पीने) या तर्के सलात (या'नी नमाज़ को तर्क करने)

1...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 472

www.dawateislami.net

की त़रह़ उस की ह़ुरमत ज़रूरिय्याते दीन से न हो ग़रज़ ज़रूरिय्यात के सिवा किसी शै का इन्कार कुफ़्र नहीं अगर्चे साबित बिल क़वात़ेअ़ (या'नी क़ुरआने पाक की आयत या ह़दीसे मु-तवातिर से साबित) हो कि इन्दत्तह़क़ीक़ आदमी को इस्लाम से ख़ारिज नहीं करता मगर इन्कार उस का जिस की तस्दीक़ ने उसे दाइरए इस्लाम में दाख़िल किया था और वोह नहीं मगर ज़रूरिय्याते दीन ।(1)

तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है

सुवाल : तौबा के इरादे से गुनाह करना कैसा है ?

जवाब : तौबा के इरादे से गुनाह करना कि बा'द में तौबा कर लूंगा येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है । **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है ।(2)

ह़ुक़ूक़ुल्लाह और ह़ुक़ूक़ुल इबाद से तौबा करने का त़रीक़ा

सुवाल : क्या तौबा से हर गुनाह मुआफ़ हो जाता है ? नीज़ ह़ुक़ूक़ुल्लाह और ह़ुक़ूक़ुल इबाद से तौबा करने का त़रीक़ा भी बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : सच्ची तौबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वोह नफ़ीस शै बनाई है कि हर गुनाह के इज़ाले को काफ़ी व वाफ़ी है । कोई गुनाह ऐसा नहीं कि सच्ची तौबा के बा'द बाक़ी रहे यहां तक कि शिर्क व

(1)...... फ़तावा र-ज़विय्या, 5/101, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

(2)...... नूरुल इरफ़ान, पारह : 12, यूसुफ़, तह़्तल आयह : 9, पीर भाई कम्पनी, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

कुफ़्र । सच्ची तौबा के येह मा'ना हैं कि गुनाह पर इस लिये कि वोह उस के रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी थी नादिम व परेशान हो कर फ़ौरन छोड़ दे और आयिन्दा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा अ़ज़्म करे जो चारए-कार उस की तलाफ़ी का अपने हाथ में हो बजा लाए म-सलन नमाज़ रोज़े के तर्क या ग़स्ब, सर्क़ा (चोरी), रिश्वत, रिबा (सूद) से तौबा की तो सिर्फ़ आयिन्दा के लिये इन जराइम का छोड़ देना काफ़ी नहीं बल्कि इस के साथ येह भी ज़रूरी है कि जो नमाज़ रोज़े नागा़ किये उन की क़ज़ा करे जो माल जिस जिस से छीना, चुराया, रिश्वत, सूद में लिया उन्हें और वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को वापस कर दे या मुआ़फ़ कराए, पता न चले तो इतना माल तसद्दुक़ (स-दक़ा) कर दे और दिल में निय्यत रखे कि वोह लोग जब मिले अगर तसद्दुक़ पर राज़ी न हुए अपने पास से उन्हें फेर दूंगा ।

अहले इल्म ने तसरीह़ फ़रमाई है कि तौबा के अरकान तीन हैं : (1) गुज़श्ता जुर्म पर नदामत या'नी नादिम व शर्म-सार होना (2) मौजूदा त़र्ज़े अ़मल को दुरुस्त रखना और गुनाह का इज़ाला व बेख़-कनी करना (3) आयिन्दा के लिये गुनाह न करने का पुख़्ता अ़ज़्म करना, येह उस वक़्त काम का है जब कि तौबा बन्दे और **अल्लाह** तआ़ला के दरमियान हो, जैसे शराब नोशी, लेकिन अगर उस ने हुक़ूक़ुल्लाह में कोताही की और उन से तौबा करना चाहे जैसे नमाज़, रोज़े और ज़कात वग़ैरा की अदाएगी में ग़फ़्लत और कोताही की तो इस के लिये तौबा का त़रीक़ा येह है कि पहले उस कोताही पर नादिम हो फिर पुख़्ता इरादा करे कि आयिन्दा इन की अदाएगी में ग़फ़्लत से काम

www.dawateislami.net

नहीं लेगा और इन्हें हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं करेगा, फिर तमाम ज़ाएअ़ कर्दा हुक़ूक़ की क़ज़ा करे और अगर ज़ाएअ़ कर्दा हुक़ूक़ का तअ़ल्लुक़ बन्दों से हो तो सिह़्हते तौबा इस पर मौक़ूफ़ है जिस को हम ने पहले हुक़ूक़ुल्लाह के ज़िम्न में बयान कर दिया है कि इस की सूरत में अम्वाल की ज़िम्मादारी से सबुक दोश होना और मज़्लूम को राज़ी करना ज़रूरी है जिन का माल ग़स्ब किया गया, वोह उन्हें वापस किया जाए या उन से मुआ़फ़ कराया जाए और वोह मु-तअ़ल्लिक़ा अफ़्राद मौजूद और बक़ैदे ह़यात न हों तो उन के वु-रसा मु-तअ़ल्लिक़ीन और क़ाइम मक़ाम अफ़्राद व वु-कला के ज़रीए़ अम्वाल की वापसी और मुआ़फ़ी अ़मल में लाई जाए, **क़ुन्यह** में है अगर किसी शख़्स पर लोगों के क़र्ज़ाजात म-सलन ग़स्ब, मज़ालिम और जिनायात की क़िस्म से हों और तौबा करने वाला उन मु-तअ़ल्लिक़ा अफ़्राद को नहीं जानता पहचानता तो इतनी मिक़्दार फ़ु-क़रा व मसाकीन में क़ज़ा की निय्यत से ख़ैरात कर दे, **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा करने के बा वुजूद अगर उन अफ़्राद को कहीं पा ले तो उन से मा'ज़िरत करे (या'नी उन से मुआ़फ़ी मांगे) अगर मज़ालिम का तअ़ल्लुक़ इ़ज़्ज़त वग़ैरा से हो जैसे किसी को गाली देना, ग़ीबत करना, तो इन में वुजूबे तौबा उस शर्त़ समेत जो हम ने हुक़ूक़ुल्लाह के ज़िम्न में बयान किये हैं येह है कि जो कुछ इस ने उन के बारे में कहा उन्हें इस जुर्म पर इत्तिलाअ़ दे और उन से मुआ़फ़ी मांगे, अगर येह मुश्किल हो तो पुख़्ता इरादा कर ले कि जब भी उन्हें पाएगा तो ज़रूर मा'ज़िरत करेगा, अगर इस त़रीक़े से भी

www.dawateislami.net

आ़जिज़ हो जाए या'नी मज़्लूम वफ़ात पा गया हो तो फिर **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश मांगे और **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से क़वी उम्मीद है कि वोह मज़्लूम मर्हूम को अपने जूद व एह्सान के ख़ज़ानों में से दे कर राज़ी कर देगा और दोनों में सुल्ह़ करा देगा क्यूं कि वोह जवाद, करम करने वाला, इन्तिहाई शफ़्क़त फ़रमाने वाला और रह़्म करने वाला है ।(1)

ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के मा'ना

सुवाल : म-दनी इन्आ़मात में से एक म-दनी इन्आ़म येह भी है कि "क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ़ के दौरान ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ?" येह इर्शाद फ़रमाइये कि ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ का क्या मा'ना है ?

जवाब : ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ येह दो अल्फ़ाज़ हैं, "ख़ुशूअ़ का तअ़ल्लुक़ आ'ज़ाए ज़ाहिरी से है जब कि ख़ुज़ूअ़ का तअ़ल्लुक़ दिल से है ।"(2) ख़ुशूअ़ का मा'ना है बदन में आ़जिज़ी पैदा करना म-सलन जब किसी ओ़ह्दे दार से बात की जाती है तो इन्तिहाई लजाजत, नरमी और आ़जिज़ी के साथ बात की जाती है और दौराने गुफ़्त-गू बदन भी झुक जाता है इस अन्दाज़ से बात करने को ख़ाशिआ़ना अन्दाज़ कहते हैं । इसी त़रह़ नमाज़ को इस के ज़ाहिरी आदाब, फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व मुस्तह़ब्बात के साथ अच्छी त़रह़ अदा करना और येह इसी सूरत में मुम्किन है जब येह अह़काम सीख कर अच्छे त़रीक़े से

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/121

2...... تفسیر بیضاوی، پ۱، البقرہ، تحت الآیۃ: ۴۵، ۱/۳۱۷ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

इन की मश्क़ भी की जाए।[1] जब कि ख़ुज़ूअ़ के मा'ना दिल की आ़जिज़ी के हैं, जैसे कोई बन्दा किसी सुन्नी आ़लिमे दीन या इमामे मस्जिद या अपने पीर साहिब से मिलता है तो उन की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत दिल में होने की वज्ह से ज़ाहिरी जिस्म की आ़जिज़ी के साथ साथ दिल से भी आ़जिज़ी वाला अन्दाज़ अपनाता है इसे ख़ुज़ूअ़ कहते हैं।

नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की अहम्मिय्यत

सुवाल : नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की अहम्मिय्यत के बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की बड़ी अहम्मिय्यत है चुनान्चे पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** की आयत नम्बर 1 और 2 में इर्शाद होता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।

इन आयाते मुबा-रका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "उन के दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन होते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि उस में दिल लगा हुवा और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए

1...... इस के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ का "नमाज़ व वुज़ू का अ़-मली त़रीक़ा" देखना और किताब "नमाज़ के अह़काम" का पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

और गोशए चश्म से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़बस (फ़ुज़ूल) काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों किनारे लटक्ते हों और आपस में मिले न हों और उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़-रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : तुम में से जो मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ दो रक्अ़तें अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी।(1) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : जिस मुसल्मान पर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आए और वोह नमाज़ के लिये अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करे और उसे ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा करे तो येह नमाज़ उस के पिछले गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगी जब तक कबीरा गुनाह का इरतिकाब न करे और येह अ़मल सारी ज़िन्दगी जारी रहेगा।(2) या'नी वोह नमाज़ उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती रहेगी।

मुसल्मानों की एक ता'दाद है जो दौराने नमाज़ दाढ़ी या जिस्म के दीगर आ'ज़ा से खेलती दिखाई देती है ऐसा नहीं करना चाहिये कि येह ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के मुनाफ़ी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम

مدینہ

(1) مُسلم، کتاب الطھارۃ، باب الذکر المستحب عقب الوضوء، ص۱۱۸، حدیث:۵۵۳

(2) مُسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء والصلاۃ عقبہ، ص۱۱۶، حدیث:۵۴۳

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को दौराने नमाज़ अपनी दाढ़ी से खेलते हुए देखा तो फ़रमाया : अगर इस का दिल ख़ुशूअ़ वाला होता तो इस के आ'ज़ा भी ख़ुशूअ़ करते ।(1) जब बन्दा लोगों के सामने ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ वाला अन्दाज़ अपनाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होते वक़्त ब द-र-जए औला ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ अपनाना चाहिये ।

ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ कैसे बर क़रार रखा जाए ?

सुवाल : नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ कैसे बर क़रार रखा जाए ?

जवाब : नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने और इसे बर क़रार रखने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मतो बुज़ुर्गी को पेशे नज़र रखा जाए । सूरए फ़ातिहा़ और क़ुरआने पाक की वोह मख़्सूस सूरतें जो आप नमाज़ में पढ़ते हैं उन का तरजमा "कन्ज़ुल ईमान" से अच्छी त़रह़ याद कर लीजिये । इसी त़रह़ अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीमी और दुआ़ए क़ुनूत वग़ैरा का तरजमा भी अच्छी त़रह़ ज़ेहन नशीन कर लीजिये और इन्हें पढ़ते वक़्त इन के मआ़नी व मत़ालिब पर ग़ौर करते चले जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ पैदा होगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद हु़सैन बिन मस्ऊ़द बग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि इन्सान अपनी सारी तवज्जोह नमाज़ में मरकूज़ रखे, उस के सिवा हर चीज़ से मुंह फेर ले और अपनी ज़बान से जो क़िराअत और ज़िक्र कर रहा है उस के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करे ।(2)

---

1 ...... تفسیر دُرِّمنثور، پ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ: ۲، ۶/ ۸۵ دار الفکر بیروت

2 ...... تفسیر بغوی، پ۱۸، المومنون، تحت الآیۃ: ۲، ۳/ ۲۵۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

दुआ़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ कैसे अपनाया जाए ?

सुवाल : दुआ़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ कैसे अपनाया जाए ?

जवाब : दुआ़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ अपनाने के लिये इस की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत को पेशे नज़र रखना और इस के आदाब का जानना ज़रूरी है। जिस त़रह़ इन्सान को किसी दुन्यवी बादशाह या किसी भी ओ़हदे दार वग़ैरा से कोई ग़रज़ या ह़ाजत होती है तो वोह उस के सामने ख़ाशिआ़ना अन्दाज़ इख़्तियार करता है, अ-दबो एह़तिराम और इन्तिहाई तवज्जोह के साथ उस की बारगाह में अपनी दर-ख़्वास्त पेश करता है क्यूं कि उसे मा'लूम है कि अगर ला परवाई और ग़फ़्लत से काम लिया तो बात नहीं बनेगी, जब दुन्यवी बादशाहों और ओ़हदे दारों के पास जाने और उन की बारगाहों के आदाब बजा लाने का येह आ़लम है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो बादशाहों का भी बादशाह है उस की बारगाह में अपनी ह़ाजत पेश करने और उस की बारगाह के आदाब बजा लाने का किस क़दर एहतिमाम होना चाहिये येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है। मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हम इस से ग़ाफ़िल हैं, जब दुआ़ का वक़्त आता है हम अपनी ह़ाजात अह़-कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर रहे होते हैं मगर हमें मा'लूम ही नहीं होता कि हम क्या मांग रहे हैं ? ला परवाई के साथ इधर उधर देख रहे होते हैं, उंग्लियों, नाख़ुनों या दाढ़ी के बालों से खेल रहे होते हैं बल्कि बा'ज़ तो नाख़ुनों से मैल निकाल रहे होते हैं और फिर शिक्वा येह होता है कि हमारी दुआ़ ही क़बूल नहीं होती ! दुआ़ कैसे क़बूल हो हमें मांगने का त़रीक़ा ही नहीं आता लिहाज़ा जब भी

www.dawateislami.net

दुआ़ मांगें तो इन्तिहाई तवज्जोह और यक्सूई के साथ अपने दिलो दिमाग़ को हर चीज़ से फ़ारिग़ कर के दुआ़ के आदाब को बजा लाते हुए दुआ़ मांगें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ खुशूअ़ो खुज़ूअ़ भी ह़ासिल होगा और दुआ़ भी क़बूल होगी ।

नमाज़ और दुआ़ का क़िब्ला मअ़ अह़काम

सुवाल : नमाज़ और दुआ़ का क़िब्ला क्या है ? नीज़ इन के अह़काम भी बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : नमाज़ का क़िब्ला ख़ानए का'बा है, अगर कोई ऐसी जगह पर है जहां ख़ानए का'बा उस की निगाहों के सामने है तो ऐन ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है और जहां ख़ानए का'बा सामने न हो तो जि-हते का'बा ही क़िब्ला है । अगर किसी ने बिला उ़ज़्र क़िब्ले से 45 द-रजे मुन्ह़रिफ़ हो कर नमाज़ अदा की तो उस की नमाज़ न होगी या दौराने नमाज़ जान बूझ कर क़िब्ले से सीना फेर दिया तो उस की नमाज़ टूट जाएगी । यूंही नमाज़ में बिग़ैर उ़ज़्र के क़िब्ले से चेहरा फेरना भी मक्रूहे तह़रीमी है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 491 पर है : ''मुसल्ली (या'नी नमाज़ी) ने क़िब्ले से बिला उ़ज़्र क़स्दन सीना फेर दिया, अगर्चे फ़ौरन ही क़िब्ले की त़रफ़ हो गया, नमाज़ फ़ासिद हो गई (या'नी टूट गई) और अगर बिला क़स्द (या'नी बिग़ैर इरादे के) फिर गया और ब क़दर तीन तस्बीह़ (की मिक़्दार) के वक़्फ़ा न हुवा, तो (नमाज़) हो गई । अगर सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फेरा, तो उस पर वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले

www.dawateislami.net

की त़रफ़ कर ले और नमाज़ न जाएगी, मगर बिला उ़ज़्र मक्रूह है।"

रही बात दुआ़ के क़िब्ले की तो वोह आस्मान है लिहाज़ा जब भी दुआ़ मांगें हथेलियां आस्मान की त़रफ़ फेली रखें कि येह दुआ़ के आदाब में से है जैसा कि रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان दुआ़ के आदाब बयान करते हुए फ़रमाते हैं : (दुआ़ में) हथेलियां फेली रखे। (इस के ह़ाशिये में सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं :) या'नी उन में ख़म (झुकाव) न हो कि आस्मान क़िब्लए दुआ़ है, सारी कफ़े दस्त मुवा-जहे आस्मान रहे। (या'नी पूरी हथेली आस्मान की त़रफ़ रहे।)(1) अगर किसी ने दुआ़ में क़िब्ले (या'नी आस्मान) की त़रफ़ क़स्दन भी अपनी हथेलियां न कीं तो भी शरअ़न कोई गुनाह नहीं दुआ़ हो जाएगी।

नमाज़ में आंखें बन्द रखना कैसा ?

सुवाल : दौराने नमाज़ आंखें बन्द रखना कैसा है ?

जवाब : नमाज़ में आंखें बन्द रखना मक्रूहे तन्ज़ीही है अलबत्ता अगर आंखें बन्द रखने से नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ ज़ियादा आता हो तो अब नमाज़ में आंखें बन्द रखना बेहतर है जैसा कि **दुर्रे मुख़्तार** में है : नमाज़ में आंखें बन्द रखना मक्रूह है मगर जब खुली रहने में ख़ुशूअ़ न होता हो तो बन्द करने में ह़रज नहीं।(2)

नमाज़े अव्वाबीन अदा करने का त़रीक़ा

सुवाल : नमाज़े अव्वाबीन किसे कहते हैं ? नीज़ इसे अदा करने का त़रीक़ा भी बयान फ़रमा दीजिये।

मدینہ

(1)...... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 75, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

(2)...... دُرِّمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/۴۹۹، دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

जवाब : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 666 पर है : "बा'दे मग़रिब छ[6] रक्अ़तें मुस्तह़ब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब (या'नी छ[6] रक्अ़त एक साथ) पढ़े या दो से (या'नी चार रक्अ़त और दो रक्अ़त कर के) या तीन से (या'नी दो दो रक्अ़त कर के पढ़े) और तीन सलाम से या'नी हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरना अफ़्ज़ल है।" अगर कोई एक ही सलाम से पढ़ना चाहे तो इस का त़रीक़ा येह है कि "मग़रिब की तीन रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द छ[6] रक्अ़त एक ही निय्यत से पढ़े, हर दो रक्अ़त पर क़ा'दा करे और उस में अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ पढ़े, पहली, तीसरी और पांचवीं रक्अ़त की इब्तिदा में सना (سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ), तअ़व्वुज़ व तस्मिया (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰه और بِسْمِ الله) भी पढ़े। छटी रक्अ़त के क़ा'दे के बा'द सलाम फेर दे। पहली दो रक्अ़तें (मग़रिब के बा'द पढ़ी जाने वाली) सुन्नते मुअक्कदा हुईं और बाक़ी चार नवाफ़िल। येह है अव्वाबीन (या'नी तौबा करने वालों) की नमाज़।"[1]

पढ़ूं सुन्नते क़ब्लिया वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

---

[1]...... अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 26 मुलख़्ख़सन, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची। येह मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के अवरादो वज़ाइफ़ पर मुश्तमिल एक रिसाला है जिसे शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने मुरत्तब फ़रमाया है। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2
अम्बिया व औलिया को लफ़्ज़े "या" के साथ पुकारना कैसा ?	2
लफ़्ज़े "या" के साथ दूर वालों को पुकार सकते हैं	6
बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने बारगाह को पुकार सकते हैं	7
दूर से देखना और सुनना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त नहीं	11
दूर से देखने और सुनने के वाक़िआत	11
क़सीदए नूर के एक शे'र की तश्रीह	16
दीनी काम के लिये झूट बोलना कैसा ?	17
झूट बोलना कब गुनाह नहीं ?	18
मुसल्मानों में फूट डलवाने की मज़म्मत	20
तौबा के मा'ना और इस की ह़क़ीक़त	22
तौबा करना तमाम लोगों पर वाजिब है	24
गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए तौबा करना कैसा ?	25
गुनाह को हलका या ह़लाल जानना कैसा ?	26
तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है	28
हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद से तौबा करने का त़रीक़ा	28
ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के मा'ना	31
नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की अहम्मिय्यत	32
ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ कैसे बर क़रार रखा जाए ?	34
दुआ़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ कैसे अपनाया जाए ?	35
नमाज़ और दुआ़ का क़िब्ला मअ़ अह़काम	36
नमाज़ में आंखें बन्द रखना कैसा ?	37
नमाज़े अव्वाबीन अदा करने का त़रीक़ा	37

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना (हिन्द) की शाखें

- देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6 — 011-23284560
- अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात — 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र — 09022177997
- हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना — (040) 2 45 72 786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net